ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | नवम्बर-I-2024 | अंक - 15 | माउण्ट आबू | Rs.-12

चार दिवसीय वैश्विक शिखर सम्मेलन : ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन में राष्ट्रपति ने किया शुभारंभ, राज्यपाल भी रहे मौजूद

आध्यात्मिकता से समाज में स्वच्छता और स्वास्थ्य का नया युग आरंभ होगा - राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा :-

- आध्यात्मिकता से विश्व का मार्गदर्शन करता है भारत, ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान इस पहचान को और मज़बूत बनाएं
- आध्यात्मिकता से दुनिया में शांति और स्वच्छता का संचार होगा
- राष्ट्रपति मुर्मू की अपील : धरती के ट्रस्टी बनें, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण संकट से बचने के लिए हर साल एक पेड़ लगाएं
- राष्ट्रपति का संदेश : एक स्वस्थ समाज की नींव है स्वच्छ मन
- राष्ट्रपति ने अपने भाषण में विश्व शांति, अध्यात्म, ग्लोबल वार्मिंग, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन और पर्यावरण पर बात की

- आध्यात्मिकता से आयेगी समाज में नैतिकता और संतुलन - राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े
- आध्यात्मिकता और नैतिकता का उत्थान है समाज की ज़रूरत - राज्यपाल

शांतिवन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन स्थित विशाल डायमण्ड जुबली हॉल में 'आध्यात्मिकता द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज' विषय पर आयोजित वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस मौके पर उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए विश्व शांति, अध्यात्म, ग्लोबल वार्मिंग पर बात की और केन्द्र सरकार की योजनाएं स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन और आयुष्मान भारत योजना की सराहना की। इससे पूर्व उन्होंने संस्थान के मानसरोवर परिसर में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का आह्वान : आध्यात्मिकता से स्वच्छ और स्वस्थ समाज का निर्माण

डायमण्ड हॉल में आध्यात्मिकता द्वारा स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज विषय पर आयोजित सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि आज विश्व के अनेकों हिस्सों में अशांति का वातावरण व्याप्त है। मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। ऐसे समय में शांति और एकता का

महत्व और अधिक बढ़ जाता है। शांति केवल बाहर ही नहीं, बल्कि हमारे मन की गहराई में स्थित होती है। जब हम शांत होते हैं, तभी हम दूसरों के प्रति सहानुभूति और प्रेम का भाव रख सकते हैं। इसलिए मन, वचन, कर्म सबको स्वच्छ रखना होगा। आध्यात्मिक मूल्यों का तिरस्कार करके केवल भौतिक प्रवृत्ति का मार्ग अपनाना अंततः विनाशकारी सिद्ध होता है।

राष्ट्रपति मुर्मू का संदेश : स्वच्छता और शुद्धता से जीवन में संतुलन और शांति

राष्ट्रति मुर्मू ने कहा कि आध्यात्मिकता का मतलब धार्मिक होना या सांसारिक कार्य का त्याग करना नहीं है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अपने भीतर की शक्ति को पहचानकर अपने आचरण और विचारों में शुद्धता लाना। कर्मों का त्याग करके नहीं, कर्मों का सुधार करके ही बेहतर इंसान बन सकता है। विचारों और कर्मों में शुद्धता जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन और शांति लाने का मार्ग है। स्वच्छ और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए भी यह आवश्यक है। स्वच्छ और स्वस्थ शरीर में ही पवित्र अंतःकरण का वास होता है। स्वच्छता केवल बाहरी वातावरण में नहीं बल्कि हमारे विचारों और कर्मों में भी होनी चाहिए।

आध्यात्मिकता से विश्व का मार्गदर्शन करता है भारत, ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान इस पहचान को और मजबूत बना रहे हैं

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि भारत प्राचीन समय से ही आध्यात्मिक क्षेत्र में विश्व समुदाय का मार्गदर्शन करता रहा है। मेरी कामना है कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान भारत की इस पहचान को और मज़बूत बनाने का काम करें। भौतिकता हमें क्षणिक सुख देती है, यह हम सब जानते हैं। जिसे हम असली सुख समझकर उसके मोह में पड़ जाते हैं। यही मोह हमारे दुःख व असंतुष्टि का कारण बन जाता है। दूसरी ओर अध्यात्म हमें अपने आप को जानने का, अपने अंतर्मन को पहचानने का अवसर देता है। अध्यात्म से जुड़ाव समाज और विश्व को देखने का अलग सकारात्मक दृष्टिकोण हमें प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण हममें प्राणियों के प्रति दया और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का भाव उत्पन्न करता है। आध्यात्मिकता न केवल व्यक्तिगत विकास का साधन है, बल्कि समाज में सकारात्मकता लाने का मार्ग भी है।

राष्ट्रपति मुर्मू की अपील : पृथ्वी के ट्रस्टी बनें, हर साल एक पेड़ लगाकर पर्यावरण बचाएं

मुर्मू ने कहा कि विश्व ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की समस्याओं से जूझ रहा है। इसे बचाने का प्रयास करना चाहिए। मनुष्यों को यह समझना चाहिए कि वह धरती का स्वामी नहीं है। बल्कि पृथ्वी के संरक्षण के लिए ज़िम्मेदार है। हम ट्रस्टी हैं, हम ओनर नहीं हैं। इसलिए ट्रस्टी के रूप में इस धरती, इस प्लैनेट को हम लोगों को उसी दिशा में सम्भालना है, आगे बढ़ाना है। हमें विवेक से इस ग्रह की रक्षा करनी है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस सम्मेलन में एक सत्र में क्लाइमेट चेंज का सामना करने के उपायों पर भी चर्चा होगी। मनुष्य की पॉपुलेशन बढ़ रही है, उसी हिसाब से पेड़-पौधे काटे जा रहे हैं। आज मैंने भी मान सरोवर परिसर में एक पेड़ लगाया है। राष्ट्रपति ने 140 करोड़ लोगों ने अनुरोध किया कि अपनी माँ के नाम पर या अपने जन्मदिन पर हर साल एक पेड़

-शेष पेज 9 पर...

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने किया ब्रह्माकुमारीज़ वैश्विक शिखर सम्मेलन का शुभारंभ, स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण पर दिया संदेश

आध्यात्मिकता से पुनः प्रकट होगा भारतीय संस्कृति का सौंदर्य

– राज्यपाल बागड़े

राजस्थान के राज्यपाल हरि भाऊ किसनराव बागड़े ने कहा कि यहां आकर आज बहुत आनंद की अनुभूति हो रही है। आध्यात्मिक होने का अर्थ है कि हम अपने आप को जानते हुए कार्य करें तो सब सफल होगा। ब्रह्माकुमारीज़ बहुत ही अच्छे विषय पर वैश्विक शिखर सम्मेलन आयोजित कर रही है। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम पर आधारित है। सभी सुखी रहें, सभी निरोग रहें। यह सम्मेलन समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने, अध्यात्म का संदेश देने में बहुत महत्वपूर्ण साबित होगा। सम्मेलन में आगे होने वाले सार्थक सत्रों के लिए मेरी ओर से बधाई और शुभकामनाएं।